सफलता की कहानी
ऑगनवाड़ी का करिश्मा

बच्चों के बेहतर विकास हेतु स्कूल पूर्व शिक्षा कार्यक्रम काफी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। ऑगनवाड़ी कार्यक्रम भी स्कूल पूर्व शिक्षा का ही एक अंग है। यह कार्यक्रम कितना महत्वपूर्ण है, इसे इस रूप में समझ सकते है कि एक मकान को मजबूत एवं टिकाउ होने के लिए उसके नींव को कितना मजबूत होने की जरूरत है हम अच्छी तरह जानते है कि नींव जितना मजबूत होगा, मकान भी उतना ही टिकाउ एवं मजबूत होगा। शोषित–पीड़ित परिवार के बच्चों को स्कूल पूर्व शिक्षा, स्कूल जाने एवं पढ़ने लिखने की आदत को बढ़ावा देने का एक बेहतर माध्यम है। ताकि बच्चा आगे चलकर एक अच्छा इंसान एवं जागरूक नागरिक बन सके।

स्कूल पूर्व शिक्षा की उपयोगिता को बताने वाली हम ऐसे दो बच्चों की कहानी बताने जा रहे है। जो ऑगनवाड़ी केन्द्र से स्कूल पूर्व शिक्षा ग्रहण कर अपने वर्ग में एक होनहार छात्र के रूप में बढ़ रहा है।

सन्नी कुमार उम्र– 5 वर्ष पिता का नाम रामजी महतो है, जो प्राइवेट गाड़ी के ड्राइवर है अदालत गंज झोपड–पट्टी में रहते है। दूसरा बच्चा हीरा कुमार जिसका उम्र– 6 वर्ष है, जिसके पिता का नाम कुशेश्वर साव हैं, जो अदालत गंज झोपड़–पट्टी में रहते है। तथा चाय की दुकान चलाते हे। दोनों के माता पिता अपने बच्चें से परेशान रहते थे। इन दोनों बच्चों को पढ़ाई में मन नहीं लगता था एवं धर एवं आस पड़ोस में हल्ला–गुल्ला करता रहता था। इसके बदमाशी से तंग आकर दोनों के माता पिता ने दोनों बच्चों को ऑगनवाड़ी सेविका इन्द्रावती सिन्हा, ऑगनवाड़ी केन्द्र संख्या– 65 अदालतगंज, पटना को सुधार के लिए हवाले कर दिया। ऑगनवाड़ी केन्द्र जाने से आश्र्चयजनक परिवर्तन होने लगा। दोनां लड़का मन लगाकर पढ़ने लगा। एक अच्छे बच्चें एवं आज्ञाकारी बच्चें के रूप में दोनो की गिनती होने लगी। दोनों के माता पिता काफी खुश हुए। आज के समय में सन्नी कुमार मिडिल स्कूल मिलर बीर चन्द्र पटेल पथ, पटना–1 में तिसरा वर्ग में पढ़ता है और एक होनहार बच्चें के रूप में उसकी गिनती हो रही है। दूसरा बच्चा हीरा कुमार, राजकीय कन्या विद्यालय, तारामंडल में पॉचवा वर्ग में पढ़ता है।(इस विद्यालय में पॉचवें वर्ग तक लड़का–लड़की की पढ़ाई एक साथ होती है।)

इन दोनों बच्चों के बारे में मेरी जानकारी उस समय हुई जब मैं '' भ्रमण कार्यक्रम के तहत ऑगनवाड़ी प्रशिक्षणार्थियों को विशेष प्रशिक्षण के लिए अदालतगंज, ऑगनवाड़ी केन्द्र बराबर जाता था। इन दोनों बच्चों से मेरी मुलाकात और बात हुई दोनों बच्चों ने मुझे कविता और कहानी भी सुनाया। इस तरह के आश्चर्यजनक परिवर्तन से मुझे काफी खुशी हुई। दोनों से काफी खुश थे। ये स्कूल पूर्व शिक्षा के ऑगनवाड़ी कार्यक्रम एवं ऑगनवाड़ी सेविका, श्रीमती

इन्द्रावती सिन्हा का करिश्मा। मैनें उनसे पुछा "मैडम आप इतने बिगड़े हुए बच्चों को कैसे सुधारती है? " उन्होने कहा, बिगड़े हुए बच्चों को सुधारना ही मेरे काम की प्राथमिकता है, और यह एक बहुत बड़ी कला है। खेल–खेल में प्यार दुलार से हॅसा–हॅसा के बच्चों को सिखाना पड़ता है। और साथ साथ अनुशासन की बागडोर में बाधना पड़ता है। ऑगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों को मन लगने लगता है। बच्चों में सुधार होना शुरू हो जाता है।"

श्रीमती इन्द्रावती सिन्हा, ऑगनवाड़ी सेविका को ऐसे अदभूत कार्य के लिए महामहिम राष्ट्रपति जी के द्वारा 1991 में सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

दिनेश प्रसाद,
ऑगनवाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र,
दुजरा चक, बुद्धा कॉलोनी, पटना।